NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

# बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ग्रीष्मकालीन मूंग की उन्नत खेती

मिलिन्द सागर*, नरेन्द्र सिंह

## परिचय:

वर्तमान दौर में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में किसान कम समय, लागत और हर प्रकार के मौसम में अच्छा मुनाफा प्राप्त करने के लिए विभिन्न फसलों की खेती कर रहा है। जिनमें मूंग भी एक ऐसी ही फसल है। मूंग की खेती से न केवल अपना जीवन यापन किया जा सकता है अपितु अपने स्वास्थ के साथ-साथ मृदा की भी गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है

इसका वानस्पतिक नाम बिगना रेडिएटा है। यह लेग्यूमिनेसी कुल का पौधा हैं तथा इसका जन्म स्थान भारत है। दलहनी फसलों में मूंग का अपना एक विशिष्ट स्थान है। मूंग की फसल को खरीफ,रबी एवं जायद तीनों मौसम में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। मूंग में काफी मात्रा में प्रोटीन पाए जाने से यह हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ ही खेत की मिट्टी के लिए भी बहुत फायेदेमंद है। मूंग खेत की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाती है। क्योंकि इसकी जड़ में नाइट्रोजन की मात्रा पाई जाती है। मूंग जैसी दलहनी फसलों को बोने से खेत में नाइट्रोजन की मात्रा बढती हैं, जिससे दूसरी फसलों से भी बढ़िया उत्पादन मिलता है। यह खेत में हरी खाद का काम करती है। जिससे की मृदा उपजाऊ होती है। मूंग की फसल से फलियों की तुड़ाई के बाद खेत में मिट्टी पलटने वाले हल से फसल को पलटकर मिट्टी में दबा देने से यह हरी खाद का काम करती है। यदि सही तरीके से इसकी खेती की जाए तो इससे काफी अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। मूंग बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसमें प्रोटीन के साथ-साथ रेशे एवं लौह तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।जिनमें 25 प्रतिशत प्रोटीन, 60 प्रतिशत कार्बोहायड्रेट, 13 प्रतिशत वसा तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी होता है। मूंग शक्ति-वर्द्धक होती है।

मिलिन्द सागर*, नरेन्द्र सिंह
परास्नातकोत्तर छात्र, सस्य विज्ञान विभाग
बाँदा कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा ( उत्तर प्रदेश )

इसके सेवन से बुखार/ज्वर और कब्ज के पीड़ितों को काफी लाभ होता है। मूंग की जल्दी पकने वाली एवं उच्च तापमान को सहन करने वाली प्रजातियों के विकास के कारण जायद में मूंग की खेती लाभदायक हो रही है। मूंग की उन्नत तकनीक अपनाकर जायद ऋतु में फसल का उत्पादन 10-15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक लिया जा सकता है। इस लेख के माध्यम से हम आपको मूंग की खेती का सही तरीका एवं इसकी खेती से होने वाले लाभ के बारे में जानकारी देगे। इस जानकारी से आपको इसकी खेती करने में आसानी होगी।

| पोषक तत्व | मात्रा (100 ग्राम) |
|---|---|
| **कार्बोहाइड्रेट्स** | 62.62 |
| **शुगर** | 6.6 |
| **फैट** | 1.15 |
| **प्रोटीन** | 23.86 |
| **नियासिन** | 2.251 |
| **विटामिन C** | 4.8 |
| **विटामिन K** | 9 |
| **आयरन** | 6.74 |

## उपयक्त जलवायु

यह फसल कम सिचाई के साथ-साथ उच्च तापमान को सहन करने वाली फसल है। इसकी खेती खरीफ,रबी एवं जायद तीनों मौसम में सफलतापूर्वक कर सकते है। जिन क्षेत्रों में 60 से 75 सेमी तक वार्षिक वर्षा होती है, मूंग की खेती वहां के लिए उपयुक्त होती है। इसकी खेती के लिए 25 से 35 डिग्री का तापमान उपयुक्त होता हैं। यह इससे भी अधिक का तापमान आसानी से सहन कर सकती है। इसकी खेती के लिए दोमट, मटियार भूमि समुचित जल निकास वाली, जिसका पीएच मान 7 से 8 हो, ऐसी भूमि इसकी खेती के लिए उत्तम होती है।

## बुआई का समय

ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई का अनुकूल समय 10 मार्च से 10 अप्रैल होता है ग्रीष्मकाल में मूंग की खेती करने से अधिक तापमान तथा कम आद्रता के कारण बीमारियों तथा कीटों का प्रकोप कम हो जाता है, परंतु इससे देरी से बुआई करने पर गर्म हवा तथा वर्षा के कारण फल्लियों को नुकसान होता हैं। अप्रैल में शीघ्र पकने वाली प्रजातियों को लगाना उत्तम होता है ।

## भूमि और तैयारी

मूंग की अधिक पैदावार के लिए इसके खेत की बुवाई के लिए पहले खेत को उपचारित तरीके से तैयार करना चाहिए। इसके लिए बुवाई से पहले खेत की पहली जुताई हैरो या मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। इसके बाद दीमक से फसल की सुरक्षा के लिए क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से डालकर दो-तीन जुताई कल्टीवेटर से करके खेत को अच्छी तरह भुरभरा बना लेना चहिए। आखिरी जुताई में लेवलर लगाकर खेत को समतल करना चाहिए।

जायद की फसल के लिये पलेवा देकर खेत की तैयारी करनी चाहिये। 2-3 जुताई देशी हल से करने के बाद पाटा लगाना चाहिये जिससे मृदा भुरभुरी हो जाये और भूमि में नमी संरक्षित रहे।

**बीजदर एवं बीजोपचार**

अधिक पैदावार के लिए बुवाई से पहले बीज की मात्रा और बीजोपचार का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। और स्वस्थ एवं अच्छी गुणवता वाले उन्नत बीजों की बुवाई करनी चाहिए।ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई हेतु 20-25 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। बीजों को 2.5 ग्राम थायरम एवं 1.0 ग्राम कार्बेन्डाजिम या 4-5 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। फफूंदनाशी से बीजोपचार के पश्चात् बीज को राइजोबियम एवं पीएसबी कल्चर से उपचारित करें। राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के लिये 25 ग्राम गुड़ तथा 20 ग्राम राइजोबियम एवं पीएसबी कल्चर को 50 मिलीलीटर पानी में अच्छी तरह से मिलाकर 1 किलोग्राम बीज पर हल्के हाथ से मिलाना चाहिये एवं बीज को 1-2 घंटे छायादार स्थान पर सुखाकर बुआई के लिये उपयोग करना चाहिये।

**उन्नत किस्मे**

मूंग की बहुत सी प्रजातिया अधिक उत्पादन देने में सक्षम है जिनमे से कुछ है, के.-851, पूसा 105, पी.डी.एम. 44, एम.एल.-131, जवाहर मूंग 721, पी. एस-16, एच.यू.एम.-1, किस्म टार्म 1, टी.जे. एम-3 आती हैं। इसके अलावा निजी कंपनियों की किस्मों में शक्तिवर्धक: विराट गोल्ड, अभय, एसव्हीएम 98, एसव्हीएम 88, एसव्हीएम 66 आदि शामिल हैं।

**बुआई का तरीका**

मूंग की बुवाई सीडड्रिल की सहायता से कतार विधि में ज्यादा उपयुक्त होती है। इसमें पौधे से पौधे की दूरी समान होती है। और अंकुरण भी अच्छा होता है।मूंग को 25-30 सेमी कतार से कतार तथा 5-7 सेमी पौधे से पौधे की दूरी पर बुआई करें एवं बीज को 3-5 सेमी गहराई पर बोना चाहिये जिससे अच्छा अंकुरण प्राप्त हो सके। इससे हर पौधे को समान रूप से पानी, हवा, पोषक तत्व मिलने में सहायता होती है और हर पौधा समान रूप से अपनी पूरी वृधि करने में सक्षम हो जाता है।

**पोषक तत्व प्रबंधन**

सामान्य रूप से मूंग की फसल में 15-20 किलोग्राम नत्रजन, 40-60 किलोग्राम स्फुर तथा 20-30 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें । सभी उर्वरकों को बुआई के समय डालना चाहिये ।

**जल प्रबंधन**

जायद में हल्की भूमि में 4-5 बार सिंचाई की जबकि भारी भूमि में 2-3 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसकी खेती में फव्वारा या रेनगन सिंचाई विधि का भी इस्तेमाल कर सकते है।यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि शाखायें बनते समय तथा दाना भरते समय भूमि में नमी पर्याप्त रहे।

**खरपतवार प्रबंधन**

जायद की फसल में पहली सिंचाई के पश्चात् हस्तचालित हो या हाथ से निंदाई करके खरपतवार निकालें। समय-समय पर खेत का निरिक्षण कर खर-पतवार की पैदावार पर नज़र रखनी चाहिये और आवश्यकता पड़ने पर दूसरी निंदाई फसल में की जा सकती है।

**रोग प्रबंधन**

मूंग में विभिन्न प्रकार के रोग लग सकते है जिनमे से फफूंदजनित रोगों में चूर्णी कवक, मैक्रोफोमिना झुलसन, सरकोस्पोरा पर्ण दाग तथा एन्थ्रेक्नोज प्रमुख हैं। इन रोगों की रोकथाम के लिये रोगरोधी किस्मों का चयन करें तथा खेत में उचित जल निकास रखें। तथा बुआई के 30 दिन बाद फसल पर कार्बेन्डाजिम दवा की 500 ग्राम मात्रा 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद छिड़काव दोबारा कर सकते हैं।इसके अलावा मूंग में पीला मोजेक या पीली चितेरी रोग अधिक लगता है यह एक विषाणुजनित रोग है जिसका

एक पौधे से दूसरे पौधे में संक्रमण सफेद मक्खी द्वारा होता है। सर्वप्रथम नई पत्तियों की नसों के बीच में पीले और हरे रंग के कोणीय धब्बे पड़ते हैं बाद में प्रभावित पत्तियों का पीलापन धीरे-धीरे बढ़ता जाता है और पूरी पत्ती पीली पड़ जाती है। इसकी रोकथाम के लिये रोगरोधी प्रजातियां लगायें। खेत में ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रारंभ में कुछ ही रोगी पौधे होते है जिन्हें लक्षण दिखते ही उखाड़कर नष्ट कर दें और सफेद मक्खी की रोकथाम करें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड की 150 मिली या डाइमिथिएट की 400 मिली प्रति हेक्टेयर मात्रा 400 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें और 12-15 दिन में छिड़काव दोहरायें। सफेद मक्खी के पोषक खरपतवारों को खेत की मेड़ों पर या आसपास न रहने दें ।

**कीट प्रबंधन**

मूंग की परिपक्वता के उपरांत फसल पर काटने वाले एवं रसचूसक दोनों प्रकार के

कीटों का प्रकोप होता है। भेदक कीटों में पिस्सू भृंग, फली भेदक कीट तथा पत्ती मोड़क कीट प्रमुख हैं जिनके नियंत्रण के लिये प्रोफेनोफॉस की 1 लीटर या क्लोरेन्ट्रानिलिट्रोल की 500 मिली या स्पाइनोसैड की 125 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से दो बार छिड़काव करें। रस चूसक कीटों जैसे सफेद मक्खी, थ्रिप्स या जैसिड्स के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड की 150 मिली या डाइमिथिएट की 400 मिली प्रति हेक्टेयर मात्रा का छिड़काव करें। भेदक एवं रसचूसक दोनों प्रकार के कीटों का प्रकोप होने पर प्रोफेनोसाइपर दवा की 1 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर कीटों का नियंत्रण किया जा सकता है।

**<u>कटाई,गहाई एवं भंडारण</u>**

जब मूंग की 85 प्रतिशत फलियां परिपक्व हो जायें तब फसल की कटाई करें। अधिक पकने पर फलियां चटक सकती हैं अत: कटाई समय पर किया जाना आवश्यक होता है। कटाई उपरांत फसल को गहाई करके बीज को 9 प्रतिशत नमी तक सुखाकर भंडारण करें।